

## पुत्र-वियोगिनी श्रीकौशल्या

पाँचवाँ प्रेमी-( साईं को मधुर आशीष देकर ) मेरे  
प्यारे साहिब ! मैं साईं का मंगल मनाकर एकान्त में जा बैठा ।  
मनोवृत्ति संसार से ऊपर उठ गयी, तब मैंने देखा वशिष्ठनन्दिनी  
श्रीसरयू नदी के तट पर एक छोटी सी झोंपड़ी है । राजमहल के  
ही उद्यान में श्रीसरयू की ओर यह पर्णकुटी बनवाकर श्रीकौशल्या  
मैया रहती हैं । अपने परम दुलारे, नयनों के तारे, प्राणों से भी  
प्यारे श्रीरामचन्द्र के वियोग में अपने बछड़ों से बिछुड़ी गाय के  
समान दुबला पतला शरीर, फटे पुराने वस्त्र, बिछाने के लिये  
एक मामूली सी चटाई । आज महारानी अपने वन-बटोही  
लालन के कुशल-मंगल के लिए तपस्वनी बन रही हैं । उनकी  
आँखों में अपने परम सुकुमार हृदय के सर्वस्व बच्चों का तपस्वी  
रूप दीख रहा है । हा राम ! हा जनकनन्दिनी !! हा लाड़ले  
लक्ष्मण !” कहती हुई क्रंदन कर रही हैं । उसी समय श्रीसुमित्रा-  
देवी थोड़े से कन्दमूल-फल लेकर आयीं और मैया को खिलाने का  
प्रयत्न करने लगीं । श्रीकौशल्या मैया रो-रोकर कहनें लगीं-  
“देखो ! बहिन, देखो ! मेरे साँवरे, सलोने, सुकुमार राजकुमार  
धूप में चलने के कारण पसीने से लथपथ होकर छोटे से वृक्ष की  
छाया के सहारे व्याकुल बैठे हैं । मेरे प्यारे रामभद्र के सुकोमल

पाँवों में काँटे लग गये हैं । मेरी प्यारी बेटी मिथिलेश किशोरी उन्हें कितनी सावधानी से निकाल रही हैं । शरीर धूलि-धूसरित हो रहा है । आज यह भोर ही से भूखे, प्यासे हैं । इस बीहड़ वन में जल भी दुर्लभ है, फल-फूल की तो बात ही क्या । देखो, देखो बहिन ! इनके होंठ सूख रहे हैं । तुम सुनती नहीं हो ? माँ माँ पुकारकर मुझे बुला रहे हैं । अब मुझसे नहीं रहा जाता । मैं तो अब अपने प्यारे दुलारे रघुवर के पास जाऊँगी । हाय हाय ! तुमने मेरी कोख से क्यों जन्म लिया ? इसी के कारण तो तुम्हें इतने कष्ट उठाने पड़े । बहिन, मैं तो वहीं जाऊँगी । मैया दौड़कर जाना चाहती हैं और सुमित्राजी समझा बुझाकर पाँव पकड़कर रोकने की कोशिश कर रहीं हैं । ( सब रोते हैं ) उसी समय श्री किशोरीजी का पाला हुआ मृगशिशु छलाँग भरता हुआ आ पहुँचा और मैयाका पल्ला मुखमें पकड़कर खींचने लगा । मैया ने बड़े उल्लास से उसे उठा लिया और हृदय से लगाकर दुलारने लगीं । मैया के चेहरे पर कुछ सुख की एक हलकी-सी रेखा मालूम पड़ी, मानो युगल ही मिल गये हों । मृगशिशु के शीश पर हाथ फेरने लगीं । लगातार छलकते हुए आँसुओं की झड़ी से वह मृग-शिशु भीग गया । मैया की अत्यन्त व्याकुलता देखकर सुमित्रादेवी ने कहा अब हमारा मंगलदिवस बहुत समीप है । चौदह वर्ष की अवधि में दो ही दिन तो बाकी हैं । श्री कौशल्यादेवी मानों विरह की नींद से जग गयीं- “अच्छा, मेरे प्यारे बच्चे आ रहे हैं ? कहाँ हैं ? किधर हैं ?” इस प्रकार कहती दौड़ती छतपर

चढ़ गयीं और अपने भूखे प्यासे नेत्रों से दक्षिण की ओर देखने लगीं-“अरे ! इधर तो कहीं नहीं दीखते ! कहीं मेरे लाड़ले लाल नीचे तो नहीं आ गये ?” उन्मादिनी के समान बड़ी शीघ्रता से नीचे की ओर दौड़ीं । विरह-दुर्बलता होने के कारण गिर गयीं । मेरा रोम-रोम काँप उठा । सम्हालने के लिये दौड़ा-“मैया ठहरो ! मैया ठहरो !!” सखियों ने आकर चेत कराया । बोलीं-‘मेरे लाड़ले लाल आ गये क्या ? मेरे दुलारे राम, मेरी पुत्रवधू और लक्ष्मण के साथ आ गये क्या ?’

“हाँ मैया, आ रहे हैं !”

“आ रहे हैं ??”

“हाँ मैया, आ रहे हैं” ऐसा सुनकर वन की ओर दौड़ीं । सारा रनिवास दौड़ पड़ा । भावावेश में मीलों चलीं गयीं । यह-यह मेरा राम है, यह मेरा राम है ! ऐसा कह कर एक श्याम तमाल से लिपटकर अचेत हो गयीं । उन्हें अचेत अवस्था में ही उठाकर महल में लाया गया । उसी समय पुष्पक विमान-की घर-घराहट सुनायी पड़ी, आहट मिली । सुमित्रादेवी उन्हें सचेत करती हुई बोलीं--‘दीदी, आ गये ! आ गये तेरे प्राण प्यारे बच्चे !! आ गये हमारे जीवनसर्वस्वा ! दीदी, दीदी ! देखो !!’ मैया ने नेत्र खोला-देखा के चरणों पर मस्तक झुका रहे हैं । निर्धन को अपना खोया धन मिल गया, मानो मुर्दा-शरीर में प्राण आ गये हों । मैया ने अपने लाड़लों को हृदय से सटा लिया । “श्रीयुगलसरकार की जय हो !” “श्रीकौशल्याकिशोर

की जय हो !” “श्रीसुमित्रानन्दन की जय हो !” जय-जय की ध्वनि से महल गूँज उठा । मैंने देखा के हमारे सन्त सद्गुरु प्यारे साईं श्रीयुगलसरकार को पुष्पहार पहना रहे हैं । फिर मैंने युगलसरकार को भोग लगाकर प्रसाद पाया और प्यारे साईं की शरण में आया ।